नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक :03.01.2020

प्रकाशनार्थ

(भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन)

हिन्दुकुश और हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं से आच्छादित समुद्र पर्यंत भारतीय भूभाग में सरस्वती–सिन्धु नदी के तट पर विकसित वैदिक सभ्यता–संस्कृति कालान्तर में भारतीय संस्कृति अथवा हिन्दू संस्कृति के रूप में प्रतिष्ठित हुई। भारतीय संस्कृति ने अपनी विकास यात्रा में जिन मानव मूल्यों का सृजय किया वे न सिर्फ स्थानीय हैं अपितु वैश्विक हैं, समस्त मानव समाज के लिए हैं। यही कारण है कि आत्म–शुद्धीकरण, युगानुकूल परिवर्तन की क्षमता, विश्व क अन्यान्य संस्कृतियों से सीखनें, संपूर्ण मानव समाज के कल्याण की भावना तथा विश्व की समस्त संस्कृतियों के प्रति सम्मान की भावना के कारण भारतीय संस्कृति अपने उद्भवकाल से लेकर अब तक निरन्तर विकासमान है। अपने मजबूत तार्किक एवं वैज्ञानिक आधार के कारण ही आज भारतीय संस्कृति समूचे विश्व की संस्कृति का मूलाधार बनकर वैश्विक स्तर पर मानव समाज के कल्याणार्थ प्रसारित हो रही है। उक्त बातें **भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित तथा नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र, महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज, जंगल धूसड़** तथा **भारतीय इतिहास संकलन समिति गोरक्षप्रांत** के संयुक्त तत्वावधान में **"भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार"** विषय पर युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के 125वें तथा राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेधनाथ जी महाराज के जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे **विश्व बुद्धिष्ट मिशन के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 मेधांकर रवि जी** ने कही।

संगोष्ठी को मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित करते हुए **अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना नई दिल्ली** के **राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ बालमुकुन्द पाण्डेय** ने कहा कि भारतीय संस्कृति का मेसोपोटामिया, मिश्र, यूनान सहित दुनिया के अन्य देशों में प्रभावों के प्रमाण उपलब्ध हैं। बौद्धमत का मध्य एशिया चीन, तथा दक्षिण–पूर्व एशिया में प्रभाव अब तक देखा जा सकता है। डॉ. पाण्डेय ने बताया कि यदि विश्व के अनेकानेक देशों पर पड़े हुए कुछ पर्दों को हटाया जाए तो निश्चित रूप से वहां भारतीय संस्कृति दृष्टिगत होगी। मौर्य सम्राट अशोक का मिस्र तक के देशों में लोक कल्याणकारी कार्यों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के प्रसार की दुनिया साक्षी रही है। पतंजलि एवं महायोगी गोरखनाथ प्रवर्तित योग की स्वीकृति विश्व योग दिवस के रूप में अभी–अभी 2014 ई0 में प्राप्त हुई है तथा दुनियां के 192 देशों में योग की स्वीकृति भारतीय संस्कृति के प्रसार एवं प्रभाव की सूचक है। भारतीय संस्कृति का विस्तार व प्रसार इस तरह व्याप्त है कि विश्व के नक्शे पर हम जहाँ कहीं भी उंगली रखते हैं वहाँ हमें भारतीय संस्कृति ही मिलती है। आधुनिक काल में पश्चिमी ज्ञान परम्परा एवं मैक्समूलर द्वारा लिखित इतिहास ने जिस तरह से भारतीय संस्कृति एवं इतिहास को प्रस्तुत किया है उसका आवरण हमें जनमानस के आँखों से हटाना है

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित **दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग** के **विभागाध्यक्ष प्रो0 शीतला प्रसाद सिंह** ने कहा कि आज भौतिकतावाद–उपभोगवाद तथा आतंकवाद से जूझ रही दुनिया को सिर्फ और सिर्फ भारतीय संस्कृति के शांतिप्रिय योग–आध्यात्मिक जीवन–दृष्टि में समाधान दिखाई देना, भारतीय संस्कृति के वर्तमान प्रासंगिकता

को स्वयं उद्घाटित करता है। विश्व का मातृपूजा प्रदान करने में भारत की महती भूमिका है। भौतिक विकास के चरम बिन्दु की ओर बढ़ते विश्व में असंतोष, गलाकाट प्रतिस्पर्धा एवं अशांत मन एक गम्भीर चुनौती बना हुआ है। अनवरत प्रगति पथ पर बढ़ता हुआ मानव–समाज सुख–शान्तिपूर्ण जीवन से दूर होता हुआ महसूस कर रहा है। ऐसे में वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति के सनातन जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता पुनः बढ़ती जा रही है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए **भारतीय इतिहास संकलन समिति** के पूर्व अध्यक्ष **प्रो0 महेश कुमार शरण** ने कहा कि श्रीगोरक्षपीठ के पीठाधीश्वरों ने अपना संपूर्ण जीवन भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार में ही खपाया है। यह वर्ष युगपुरूष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वी जयन्ती तथा राष्ट्रसन्त महंत अवेधनाथजी महाराज का जन्म शताब्दी वर्ष है। अतः अपने ऐसे महान पूर्वजों के कार्य को आगे बढ़ाते हुए भारतीय संस्कृति के प्रसार में हम सभी को आना होगा। इस हेतु ऐसी ही विचार गोष्ठियों का अनवरत आयोजन करते रहना होगा। भारतीय संस्कृति के सिद्धांत ही विश्व को भौतिक विकास एवं शान्ति एक साथ प्राप्त करने का मार्ग सुझा सकते हैं। दक्षिण पूर्व एशिया में आज भी हजारों संस्कृत अभिलेख उपस्थित हैं जिन्हें भारतीय संदर्भ में व्याख्यायित करना आवश्यक है। इस अवसर पर **नवनालन्दा महाविहार के आचार्य डॉ. प्रेमशंकर श्रीवास्तव** ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा कार्यक्रम का संचालन **आई. सी. एच. आर. के रिसर्च फेलो श्री सुबोध कुमार मिश्र** ने किया। कार्यक्रम में गया से आए हुए बौद्ध भिक्षुओं के दल द्वारा मंगलपाठ प्रस्तुत किया गया। साथ ही **प्रो. महेश कुमार शरण** द्वारा लिखित **पुस्तक भगवतगीता इन डे–टुडे लाइफ** का मंचास्थ अतिथियों द्वारा विमोचन हुआ। उद्घाटन अवसर पर प्रो. हिमाँशु चतुर्वेदी, प्रो. मनोज तिवारी, प्रो. ध्यानेन्द्र नरायण दूबे, डॉ. रामप्यारे मिश्र, डॉ. प्रकाश प्रियदर्शी, डॉ. उग्रसेन सिंह, डॉ शैलेन्द्र उपाध्याय, डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय, डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डॉ. सच्चिदानंद चौबे, डॉ. ज्ञान प्रकाश मंगलम, डॉ. सर्वेश शुक्ल, डॉ. अनुज प्रताप सिंह, डॉ. रविन्द्र आनन्द सहित विभिन्न विभागों के शोधार्थी एवं शहर के गणमान्य नागरिकों सहित महाविद्यालय के समस्त शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

(डॉ. राहुल मिश्रा)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकार